मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

द्वितीय सत्राद्ध
एम०-सी०सी-7

साहित्यमे काव्यक प्रयोजन

प्रो० सत्यनारायण मेहता

संसारमे प्रत्येक कार्य उद्देश्ययुक्त होइत छैक ओ कार्य प्रकृति द्वारा होअए वा मानव द्वारा होअए। तें ई कहल जा सकैत अछि जे प्रकृति द्वारा एहि सृष्टिक निर्माणमे सेहो कोनो ने कोनो उद्देश्य रहल होएत। तहिना मानवक प्रत्येक कार्यक पाँछा कोनो ने कोनो उद्देश्य अवश्य निहित रहैत छैक। काव्यक सृजनक पाछू सृजनहारक कोनो ने कोनो उद्देश्य अवश्य रहैत छैक। एही उद्देश्यकेँ काव्यक प्रयोजन कहल जाइत अछि तखन तें ई अवश्ये कहल जा सकैत अछि जे काव्य रचनाक कारण मानव आन्तरिक प्रेरणा थिक।

भारतीय काव्यशास्त्रक आचार्य लोकनि अपन-अपन ढंगसँ काव्यक प्रयोजनक प्रसंग प्रारम्भहि कालसँ विचार करैत आबि रहलाह अछि। साहित्य ओ मानव जीवनमे घनिष्ठ सम्बन्ध होइत छैक, तें ई कहल जा सकैत अछि मानव जीवनक प्रेरणासँ साहित्यक सृजन होइत छैक। एहि ठाम स्पष्ट करब आवश्यक अछि जे काव्यक पर्यायवाची शब्द साहित्य अछि। आचार्य भरतमुनि नाटकक प्रयोजनक संदर्भमे जे कहने छथि ओ काव्यक प्रयोजन पर सेहो घटित होइत छैक। आचार्य भरतक उक्ति छनि —

> दुःखार्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम।
> विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति॥
> धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम।
> लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥

अर्थात् ई धर्म, यश एवं आयु साधक, कल्याणकारक बुद्धिवर्द्धक एवं लोकोपदेशक सभ प्रकारक मनुष्यक लेल होइत अछि। ई लोक मनोरंजक एवं शोकपीड़ित तथा परिश्रान्त व्यक्तिकेँ विश्रान्ति प्रदान करएनिहार होइछ।

आचार्य भरतमुनिक पश्चात आचार्य भामह काव्यक प्रयोजन प्रसंग विचार करैत कहलनि जे सत्काव्यक अनुशीलनसँ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-

एहि चारु पुरुषार्थक अतिरिक्त समस्त कला मे निपुणता तथा कीर्त्ति एवं आनन्दक उपलब्धि होइत अछि —

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्त्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य-निबन्धनम् ॥

एहि क्रममे आचार्य भामह कीर्त्तिक प्रशस्ति गान करैत रहो कहलनि जे उत्तम काव्यक सृष्टिकर्त्ता कवि लोकनि मृत्युक पश्चात् सेहो हुनक काव्यरूपी शरीर शास्वत रहैत अछि। ओ अपन रचना द्वारा ता धरि जीवित रहैत छथि जा धरि मानवता जीवित रहैत अछि।

आचार्य भामहक पश्चात् आचार्य वामन काव्यक दुइ टा प्रयोजन मानने छथि दृष्ट एवं अदृष्ट। एकर हि ओ क्रमशः प्रीति एवं कीर्त्ति सेहो कहने छथि। दृष्ट प्रयोजन अर्थात् प्रीतिक द्वारा लौकिक एवं अदृष्ट अर्थात् कीर्त्तिक द्वारा अलौकिक फलक प्राप्ति होइछ।

काव्यं सद्दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्त्तिहेतुत्वात् ।
काव्यं सत् चारु, दृष्ट प्रयोजनं प्रीतिहेतुत्वात् ॥
अदृष्ट प्रयोजनं कीर्त्तिहेतुत्वात् ॥

आचार्य वामनक पश्चात् आचार्य रुद्रट एक प्रसंग अपन मान्यता प्रस्तुत करैत कहलनि जे काव्य रसिक लोकनिकें सहज रूपसँ चतुर्वर्गक फल प्राप्तिक अतिरिक्त अर्थोपशम विपद निवारण रोग विमुक्ति एवं अभीष्ट फलक प्राप्ति करबैत अछि।

हिनक पश्चात आचार्य कुन्तक कहलनि जे काव्य उच्चवंशमे उत्पन्न, परिश्रमसँ रहित तथा मन्दबुद्धि रखनिहार राजकुमार लोकनिक हृदयकेँ आनन्दित कएनिहार होइत अछि तथा हृदयहारी एवं मृदुशैलीमे कथित धर्मादि चतुर्वर्गक प्राप्तिक मार्ग अछि।

एकरा द्वारा व्यवहार आ लोकाचारमे लागल व्यक्तिकेँ नित्यप्रति नूतन औचित्यसँ युक्त व्यवहारिक सुन्दर रूपक ज्ञान होइत अछि। एकर रसास्वादक लोकनिकें धर्म, अर्थ काम एवं मोक्ष आनन्दसँ विशेष रूपक आनन्द उपलब्ध करबैत अछि। एहि प्रकारें आचार्य कुन्तक

काव्यक तीन टा प्रयोजन मानने छथि। आओर से अछि—
(1) अलौकिक चतुर्वर्गक प्राप्तिक शिक्षा
(2) व्यवहार आदिक सुन्दर रूपक प्रवृत्ति
(3) लोकोत्तर आनन्दक उपलब्धि

आचार्य कुन्तकक पश्चात् काव्य प्रयोजनक प्रसंग विस्तार पूर्वक विचार कएनिहार आचार्य मम्मट छथि हिनका द्वारा प्रस्तुत विचार स्वतन्त्र विद्वान लोकनिक मध्य पर्याप्त लोकप्रिय अछि। हिनक मत कें निम्नलिखित श्लोकमे देखल जाए—

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

अर्थात् काव्यक मुख्यतः छओ टा प्रयोजन होइत अछि—

(1) यशप्राप्ति (2) अर्थ लाभ (3) व्यवहार ज्ञान (4) अनिष्ट निवारण
(5) सद्यः परनिवृत्ति (6) कान्तासम्मिततयोपदेश

1. यश प्राप्ति — काव्य सृष्टिक पहिल प्रयोजन अछि—यशप्राप्ति। यशक कामना प्रत्येक लोककें होइत छैक। एहि हेतु कहल गेल अछि जे यश कोनो महान व्यक्तिक दुर्बलता होइत अछि—

Fame is the last infirmity of noble mind.

यश एक प्रधान प्रेरक तत्व अछि। कालिदास, भवभूति, विद्यापति आदि कवि लोकनि यशक लेल काव्यक रचना कएने छलाह। भर्तृहरिक अनुसार कविक भौतिक शरीर नष्ट भए जाइत अछि। मुदा जरा-मरणसँ रहित यश रूपी शरीर अमर रहैत अछि—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥

अर्थात् ओहि रस सिद्ध कवीश्वर लोकनिक हमेशा जय होइत छनि जनिक यश रूपी शरीरकें ने तँ वृद्धावस्थाक भय अछि आओर ने तँ मृत्युक डर। कहबाक तात्पर्य जे यश जँ एक दिस कविक कृतित्वक श्रमक अनुपम पुरस्कार अछि तँ दोसर दिस ओकर अमरत्व लाभक साधन सेहो।

2. अर्थप्राप्ति — काव्यक दोसर प्रयोजन अछि—अर्थप्राप्ति।
पहिल प्रयोजन जकाँ इहो प्रयोजन मुख्यतः कविसँ सम्बन्धित अछि, अन्य कलाकार सदृश कवि सेहो

कलाक साधक होइत छथि आओर तक भौतिक वा द्रव्यगत मूल्यांकन नहि कएल जा सकैत छैक किन्तु कलाकार होएबाक संगहि संग ओहो समाजक अभिन्न अंग होइत अछि।

जहिना एक टा सामान्य व्यक्तिक दैनिक आवश्यकता होइत छैक ओ समाजमे रहि भौतिक सुख एवं प्रतिष्ठाक आकांक्षी होइत अछि तहिना कवि लोकनिकेँ दैनिक आवश्यकताक पूर्ति सेहो आवश्यक अछि। भौतिक सुखक उपभोग करब आ सामाजिक प्रतिष्ठाक आकांक्षा राखब कवि लोकनिक सेहो सहज प्रवृति होइत अछि। प्राचीन कालहिसँ राज्याश्रित कवि लोकनि अपन आश्रयदाता लोकनिक यशगान कए प्रचुर मात्रामे धन प्राप्त करैत छलाह तथा आइयो राज्य वा केन्द्रीय सरकार दिससँ कवि लोकनिकेँ हुनक रचना पर सम्मान पत्रक संग आर्थिक सहायता सेहो प्रदान कएल जाइत अछि।

3. व्यवहारज्ञान – काव्यक अध्ययन द्वारा व्यवहारिक ज्ञानक प्राप्ति सेहो होइत अछि। काव्य रचनाकार लोकनि अपन पाठककेँ अपन रचनाक माध्यमसँ सामाजिक शिष्टाचार, युगविशेष शिष्टाचार, रीति-नीति एवं जीवनक मूल्यसँ परिचित करबैत अछि। महाकवि विद्यापति, चन्दा झा, लालदास आदिक काव्यसँ तत्कालीन रीति-रेवाज आ व्यवहारक सहज ज्ञान उपलब्ध भए जाइत छैक।

4. अनिष्ट निवारण – काव्यक एक टा मुख्य प्रयोजन अछि – अमंगल निवारण (शिवेतरक्षतये)। काव्यसँ अनिष्ट निवारण सेहो होइत अछि। भारत एक धर्म प्रधान देश अछि। प्राचीन विद्वान लोकनिक विश्वास छलनि जे स्तुतिपरक काव्य रचनासँ सूर्यदेव वा देवी-देवता लोकनिकेँ प्रसन्न कएल जा सकैत अछि आओर हुनका लोकनिक कृपासँ असाध्य रोगसँ मुक्ति पाओल जा सकैत अछि। कहल जाइत अछि जे संस्कृतक कवि मयूरभट्ट सूर्यशतकक रचना कए कुष्ठ रोगसँ मुक्ति प्राप्त करने छलाह। आधुनिक कालक कवि लोकनिक रचनासँ जन-सामान्यक कष्टक निवारण होइत अछि। आधुनिक युगमे धर्मक सर्वाधिक व्यापक अछि ओ अछि मानवता। मानवतामे सभ प्रकारक धर्म समाहित अछि। एहि प्रकारेँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे काव्यक मुख्य प्रयोजन अछि जन-समुदायक सभ प्रकारक अमंगलक निवारण।

(5) सद्यः परिनिर्वृति — काव्य रचनाक वस्तुतः मुख्य प्रयोजन अछि — सद्यः परिनिर्वृति । सद्यः परनिर्वृतिक अर्थ होइछ परमानन्दक अनुभूति । आचार्य मम्मटक अनुसार काव्यक ई प्रयोजनक समस्त प्रयोजनमे शीर्ष स्थान अछि । वस्तुतः काव्यक पठन आ श्रवण काव्यक क्षणमे पाठक वा श्रोता अलौकिक आनन्द अनुभव करए लगैत छथि । परवर्ती आचार्य लोकनिक ई आरण । छथि जे मम्मटक ई आनन्द शास्त्रिक आओर किछु नहि अपितु पूर्ववर्ती आचार्य लोकनिक 'प्रीति' अछि जकरा ओ लोकनि काव्यक एकटा प्रमुख प्रयोजन मानने छथि ।

(6) कान्तासम्मिततयोपदेश — काव्यक अन्तिम मुख्य प्रयोजन अछि कान्तासम्मिततयोपदेश ।

कान्ताक अर्थ होइत छैक-पत्नी । पत्नीक सदृश मधुर उपदेश देब सेहो काव्यक प्रयोजन अछि । शास्त्रमे उपदेश देबाक तीन प्रकारक शैली मानल गेल अछि — प्रभुसम्मित, सुहृदसम्मित आ कान्तासम्मित । प्रभुसम्मित शब्दमे आज्ञा रहैत अछि आ नीक अधलाह गप्पक निर्देश रहैत अछि । वेद शास्त्रादिक उपदेश एहि श्रेणीमे आबैत अछि । सुहृदसम्मितमे आज्ञा नहि भएकें भावना होइत अछि । एहि श्रेणीमे इतिहास, पुराण आदिक उपदेश आबैत अछि । कान्तासम्मित वाक्यमे प्रेमोपदेश आबैत अछि । ई सरस होइत अछि । एहन सरसता एवं मोहकतासँ परिपूर्ण रहैत अछि जेना अनिन्दनीय सुन्दरि प्रेयसी द्वारा प्राप्त मनोहार प्रिय उपदेश ।

काव्यक प्रयोजनक संदर्भमे पाश्चात्य विद्वान लोकनि द्वारा पर्याप्त विचार कएल गेल अछि । मुदा विचारमे मतैक्यक अभाव अछि । पाश्चात्य विद्वानक तीन गोट वर्ग अछि । एक वर्ग आनन्दकें कलाक प्रयोजन मानैत अछि, दोसर वर्ग लोक मंगल आ सदाचारकें, तेसर वर्ग मध्यम मार्ग अपनबैत अछि ।

पाश्चात्य विद्वानक मत द्रष्टव्य —

1. प्लेटो - काव्यक प्रयोजन मनोरंजक, मंगलकारी नहि होइत छैक ।

2. अरस्तु – काव्यक प्रयोजन आनन्द प्रदान करब।
3. टाल्सटाय – काव्य मानवक हेतु एकताक साधन अछि।
4. ड्राइडन – काव्यक प्रयोजन प्रीतिपूर्वक शिक्षा प्रदान करब।
5. कॉलरिज – काव्यक प्रयोजन शिक्षा अछि।
6. शिलर – समस्त कलाक उद्देश्य पाठककेँ आनन्द प्रदान करब।
7. आइ०ए० रिचर्ड्स – काव्य द्वारा आन्तरिक भावकेँ स्पष्ट करब।
8. रस्किन – जन-समुदायक कल्याण करब काव्यक प्रयोजन अछि।

पाश्चात्य विद्वान लोकनि काव्यक कलाक प्रयोजनक संदर्भ मे उपर्युक्त विचारक आलोकमे काव्य कलाक नवो प्रयोजनकेँ निम्नलिखित रूपेँ प्रस्तुत कएल जा रहल अछि –

1. कलाक हेतु कला (Art to Art's sake)
2. कला जीवनक हेतु (Art for life's sake)
3. कला जीवनसँ पलायनक हेतु (Art as an escape from life)
4. कला जीवनमे प्रवेशक हेतु (Art as an entrance into life)
5. कला सेवाक हेतु (Art for service's sake)
6. कला आत्मानुभूतिक हेतु (Art for self realisation)
7. कला आनन्दक हेतु (Art for joy)
8. कला विनोदक हेतु (Art for recreation)
9. कला सृजनक अदम्य आवश्यकताक पूर्तिक हेतु (Art as creative neccessity)

पहिल प्रयोजन ओहि भावभूमिसँ सम्बन्धित अछि, जकरा भारतीय शब्दावलीमे 'स्वान्त: सुखाय' कहल गेल अछि। भारतीय आचार्य लोकनिक उद्देश्य रहैत छनि जे उक्त प्रयोजनक आलोकमे जीवनकेँ प्रचारवादी नहि बना कए ओकर कलात्मक रूपकेँ संरक्षित कएल जाए।

दोसर प्रयोजन – कला मात्र जीवनक व्याख्या नहि करैत अछि, अपितु ओकर दिशा-निर्देश सेहो करैत अछि। विशेषत: काव्य कलाक तँ ई चरम लक्ष्य होइत अछि।

Scanned with CamScanner

ओ जीवनकें सरस एवं आनन्दमय बनैबाक संगहि ओकरा भौतिक भुक्ता सँ उपर उठबैत अछि। भारतीय आचार्य मम्मट एहि प्रयोजन कें 'शिवेतरक्षतये - कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' शीर्षक अन्तर्गत राखने छथि।

तेसर प्रयोजनकें जनर्ल बुझक चाही, कारण जँ जीवनसँ पलायन विश्रामक हेतु अछि आ जीवनमे पुनः प्रवेशाक पृष्ठभूमि तैयार करए तखन तँ ओ प्रशंसनीय अछि अन्यथा त्याज्य।

चारिम एवं पाँचम प्रयोजनक आन्तरिक भाव तेसरे प्रयोजनमे अभिव्यक्त भए चुकल अछि।

छठम प्रयोजन वस्तुतः काव्य कलाक वास्तविक प्रयोजन अछि ओकर सम्बन्ध ओहि परमानन्दमय स्थिति सँ अछि जाहिमे राता, रोष आ राग भेद सभ नष्ट भए जाइछ। आचार्य मम्मट एहि स्थितिक विचार 'सद्यः परनिर्वृतये' पदक अन्तर्गत कएने छथि।

सातम प्रयोजनक तात्पर्य रचना सौंदर्य सँ प्राप्त आनन्द सँ अछि। आठम प्रयोजनक सम्बन्ध काव्यानुशीलन सँ अछि जँ इन्नु स्थितिमे परमानन्दक स्तर निम्न अछि तँ इन्नु प्रयोजनक अन्तर्भाव छठम प्रयोजनमे भए जाइछ।

नवम उद्देश्य आ प्रयोजन 'स्वान्तः सुखायेक' व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। एकर तात्पर्य समाज निरपेक्ष होएब नहि राज्याश्रय पुरस्कारादि लोभ सँ विरक्त भए काव्य सृजन सँ अछि तथा एकर उद्देश्य होइछ विशुद्ध आनन्द प्राप्त करब। आचार्य लोकनिक सेहो इएह कथन छनि जे महाकवि काव्यक सृजन एकै टा प्रयोजन सँ करैत अछि आ से अछि अलौकिक आनन्दक प्राप्ति। एकरे तेसर शब्दमे कहल जा सकैत अछि जे कवि जखन अपन अन्तःकरणक उमड़ैत भावना एवं संवेदनाकें काव्यमे अभिव्यक्ति प्रदान कए दैत अछि तखनहि हुनका असीम एवं अनुपम आनन्दक प्राप्ति होइछ।

एहि प्रकारें काव्य प्रयोजन सम्बन्धी भारतीय एवं पाश्चात्य मतमे कोनो मौलिक अन्तर नहि अछि। जकरा भारतीय आचार्य लोकनि काव्यक वास्तविक प्रयोजन मानैत छथि तकरे पाश्चात्य आचार्य लोकनि सेहो प्रकारान्तर सँ स्वीकार कएने छथि।

Scanned with CamScanner